

MBh. 6, 844 (VP. 184). — c) N. pr. einer Tochter Kratu's von der Saṁnati VP. 83, N. 7. — 4) m. oder n. pr. eines Sees: स्रपौ ऋदं च पुण्याख्यम् MBh. 3, 10898. — 5) n. a) das Gute, Rechte; s. u. 1. — b) eine religiöse Cerimonie; insbes. eine solche, die eine Frau veranstaltet, um sich die Liebe des Mannes zu erhalten und einen Sohn zu bekommen: ब्रह्मपि निमित्तेषु पुण्यमाश्रित्य दीयते MBh. 13, 4608. दानोपवासपुण्यानि HARIV. 7754. °विधि 7751. पुण्यार्थम् 7243. Vgl. पुण्यक. — c) ein Trog zum Tränken des Viehes Wils.

पुण्यक (von पुण्य) n. eine religiöse Cerimonie, = नियम, व्रत AK. 2, 7, 37. H. 843. Festlichkeit, Feier: न केवलं श्राद्धकाले पुण्यकेष्वपि दीयते MBh. 13, 4602. 4643. अन्यच्च विविधं पुण्यकं कुरु 15, 407. Insbes. eine Feier, die eine Frau veranstaltet, um die Liebe des Mannes zu bewahren und einen Sohn zu erhalten (ÇKDr. u. पुण्यकव्रत), so wie auch die dabei beobachteten Observanzen, MBh. 1, 760. अन्य तत्पुण्यकमुपाध्यायान्याः 817. 14, 2672. HARIV. 7243. 7471. 7722. fgg. पुण्यकानि च सर्वाणि चीर्णवत्पस्मि 7732. °व्रत BRAHMAVIV. P. in Verz. d. Oxf. H. 23, b, 22. das bei dieser Gelegenheit der Frau gemachte Geschenk: वधाः संप्रापयस्वेमं (masc.) पुण्यकं कृदयेस्मितम् ॥ पुण्यके सत्यया प्राप्ते पुनरेव वया तरुः — नन्दने — स्याप्यः स्यानि यथाचिते HARIV. 7654. fg.

पुण्यकर्तार (पु° + क°) m. ein Rechtschaffener, Tugendhafter: °कर्तृणां लोकाः INDR. 2, 4.

पुण्यकर्मन् (पु° + क°) adj. Gutes thugend, rechtschaffen, tugendhaft INDR. 1, 22. MBh. 12, 10926. HARIV. 7661. R. 1, 59, 3. PAÑKĀT. III. 234. HIT. 27, 6. पुण्यकर्मन् nur Gutes thugend Spr. 1032.

पुण्यकालता f. nom. abstr. von पुण्य + काल eine günstige Zeit Sūtras. 14, 3.

पुण्यकीर्ति (पु° + की°) adj. einen guten Ruf habend, berühmt MBh. 1, 3550. R. 1, 5, 1. 5, 23, 29. BHĀG. P. 9, 1, 5. BHĀTT. 1, 5. — 2) m. N. pr. eines Buddhisten WASSILJEW 79. 80. Vishṇu nimmt dessen Gestalt an SKANDAP. in Verz. d. Oxf. H. 71, a, 15. — Vgl. पुण्यश्लोक.

पुण्यकृत (पु° + कृत°) 1) adj. rechtschaffen, tugendhaft P. 3, 2, 89. Nir. 2, 14, 12, 1. ÇĀT. Br. 6, 5, 4, 8. 14, 7, 2, 12. °तो लोकाः TAITT. Ār. 10, 1, 14. BHĀG. 6, 41. MBh. 7, 2590. 2720 (lies °कृतां लोकान् st. °कृतास्त्रो° und °कृतान् लो°). N. 12, 37. R. 1, 4, 10. Spr. 1926. — 2) m. N. eines zu den Viçve Devāḥ gezählten göttlichen Wesens MBh. 13, 4355.

पुण्यकृत्या (पु° + कृ°) f. eine gute Handlung ÇĀT. Br. 1, 6, 2, 8.

पुण्यक्षेत्र (पु° + क्षेत्र) n. ein heiliges Gebiet, Wallfahrtsort; zur Erkl. von तीर्थ HALĀJ. 5, 76. von धर्मारण्ये BHĀTĪT. zu VARĀH. BRH. S. 14, 3.

पुण्यगन्ध (पु° + गन्ध°) 1) adj. f. wohlriechend: स्त्रियः RV. 7, 55, 8. Einschlebung nach 9, 67. INDR. 2, 23. RAGH. 12, 27. — 2) Michelia Champaka Lin. (s. चम्पक) TRIG. 2, 4, 17.

पुण्यगन्धि adj. dass.: स्त्रियो याः पुण्यगन्धयः AV. 4, 5, 3, 8, 10, 27. MBh. 5, 7206. Auch °गन्धिन् INDR. 2, 2.

पुण्यगृह (पु° + गृह°) n. Wohlthätigkeitshaus, Verpflegungshaus (Tempel GORR.): नाराज्ञके जनपदे कार्यसि जनाः सभाम् ॥ उद्यानानि च रम्याणि प्रयाः पुण्यगृहाणि च ॥ R. GORR. 2, 69, 13. — Vgl. पुण्यशाला.

पुण्यजन (पु° + जन) m. pl. gute Leute, Bez. bestimmter Genien: गन्धर्वाप्सरसः सपाः देवाः पुण्यजनाः पितरः AV. 8, 8, 15. 11, 9, 21. रत्नांसि स-

र्पाः पु° पितरः 6, 16. MBh. 7, 2403. HARIV. 80. दश प्राचेतसः (lies प्रचे°) पुत्राः सप्तः पुण्यजनाः स्मृताः MBh. 1, 3129. als Beiw. der Jaksha HARIV. 382. = पत्त AK. 1, 1, 4, 56. H. 194. an. 4, 188. MND. n. 196. रत्नाकामः पुण्यजनान् (पजेत्) BHĀG. P. 2, 3, 8. 4, 6, 27. 30. 10, 3 (sg.). 4. 11, 4. 5, 16, 19. RAGH. 13, 60. पुण्यजनेश्च m. Bein. Kuvera's AK. 1, 1, 4, 65. MND. r. 142. HALĀJ. 1, 79. RAGH. 9, 6. पुण्यजन = रत्नम् H. 187. H. an. MND. HALĀJ. 5, 4. eine Art Rakshas VP. 338. Nach H. an. und MND. auch = सज्जन ein rechtschaffener Mann.

पुण्यजित (पु° + जित) adj. durch gute Werke gewonnen, — erreicht: लोकं KHĀND. UP. 3, 6, 1. निजपुण्यजितंश्च सर्वभागान् PRAB. 101, 18; vgl. स्वपुण्यवित्तं BHĀTT. 4, 6.

पुण्यतीकर (पुण्यतर, compar. von पुण्य, + 1. कर) reiner machen: जलानि — इत्वाकुभिः °कृतानि RAGH. 13, 61.

पुण्यता (von पुण्य) f. Reinheit, Heiligkeit: सरस्वत्याश्च तीर्थानाम् MBh. 1, 557. 13, 4605.

पुण्यतृण (पु° + तृ°) n. heiliges Gras, Bez. des weissen Kuça-Grases RĪGĀN. im ÇKDr.

पुण्यत्व (von पुण्य) n. Reinheit, Heiligkeit: पुनत्ति लोकं पुण्यत्वात्कीर्तयः सरितश्च ते KUMĀRAS. 6, 69.

पुण्यदर्शन (पु° + दर्°) 1) adj. f. von schönem Aussehen, schön: धेनु RAGH. 1, 86. — 2) m. der blaue Holzhäher (चाप) RĪGĀN. im ÇKDr.

पुण्यडक् (पु° + 2. डक्) adj. Gutes —, Segen bringend, — verleihend: लोकाः MBh. 7, 2181.

पुण्यनाथ (पु° + नाथ) m. N. pr. eines Grammatikers Verz. d. B. H. No. 725.

पुण्यनामन् (पु° + ना°) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge des Skanda MBh. 9, 2561. — Vgl. सुनामन्.

पुण्यपुण्यता (von पुण्य + पुण्य) f. die grösste Heiligkeit: श्रवालम्बिष्यत क्वं कथं नु पुण्यपुण्यताम् (so ist wohl zu verbessern) RĪGĀN-TAR. 3, 65.

पुण्यप्रद (पु° + प्रद°) adj. verdienstlich: एकस्मिन्व्रतं निधनं प्रापिते डष्टकारिणि ॥ बहूना भवति नेमं तत्र पुण्यप्रदो वधः ॥ HARIV. 331.

पुण्यप्रसव (पु° + प्र°) m. pl. N. einer Götterklasse bei den Buddhisten VJUTP. 82. LALIT. ed. Calc. 171, 5. BURN. Intr. 202. 613. KÖPPEN I, 259.

1. पुण्यफल (पु° + फल) n. die Frucht —, der Lohn für gute Werke M. 3, 95. 5, 53.

2. पुण्यफल (wie eben) m. = लक्ष्यराम der Garten der Lakshmi ÇĀNDAM. im ÇKDr.

पुण्यबल (पु° + बल) m. N. pr. eines Königs von पुण्यवती AVADĀNAÇ. 15.

पुण्यभरित (von पुण्य + भर) adj. überaus gesegnet: भरतं °तं वर्षं मन्थामके कृदः ॥ अथि स्युर्दःपमाकाले यज्जनाः पुण्यभाजिनः ॥ ÇĀT. 1, 297.

पुण्यभाज् (पु° + भाज्) adj. glücklich: क्रीडावत्तो विनीता लघुसुरतरताः पुण्यभाजः शशाः स्युः PAÑKĀSĪJAKA im ÇKDr.

पुण्यभाजिन् (पु° + भा) adj. dass. ÇĀT. 1, 297 (s. u. पुण्यभरित).

पुण्यभू (पु° + भू) f. das heilige Land, ein N. für Ārjāvarta H. 948.

पुण्यभूमि (पु° + भूमि°) f. dass. AK. 2, 1, 8.

पुण्यमय (von पुण्य) adj. aus Gutem gebildet PRAB. 101, 12.

पुण्यमित्र (पु° + मि°) m. N. pr. eines buddhistischen Patriarchen LĪA. II, Anh. IX. Bei WASSILJEW im Index mit einer falschen Zahl